

## श्री हनुमान जी की आरती

॥ श्री हनुमंत स्तुति ॥

मनोजवं मारुत तुल्यवेगं,  
जितेन्द्रियं, बुद्धिमतां वरिष्ठम् ॥  
वातात्मजं वानरयुथ मुख्यं,  
श्रीरामदुतं शरणम प्रपद्धे ॥

॥ आरती ॥

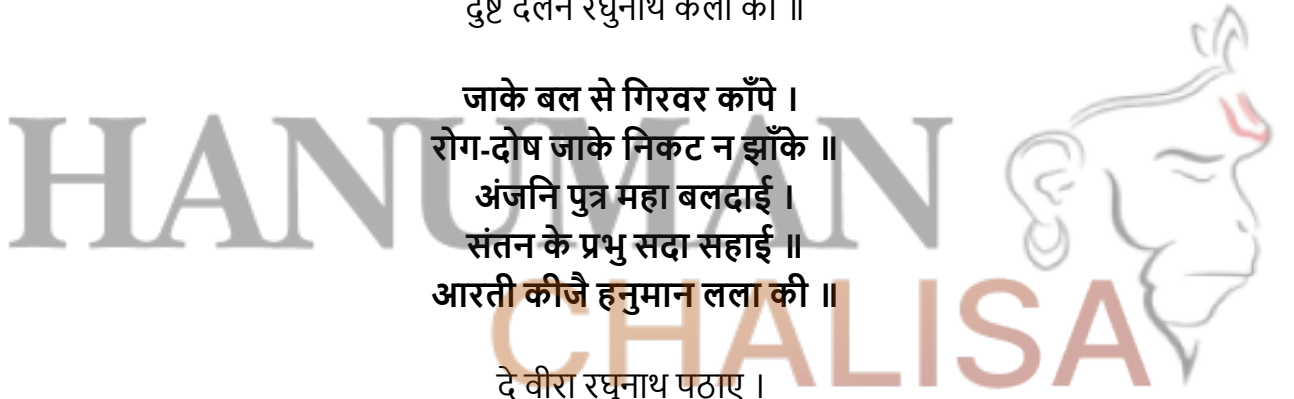
आरती कीजै हनुमान लला की ।  
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

जाके बल से गिरवर काँपे ।  
रोग-दोष जाके निकट न झाँके ॥  
अंजनि पुत्र महा बलदाई ।  
संतन के प्रभु सदा सहाई ॥  
आरती कीजै हनुमान लला की ॥

दे वीरा रघुनाथ पठाए ।  
लंका जारि सिया सुधि लाये ॥  
लंका सो कोट समुद्र सी खाई ।  
जात पवनसुत बार न लाई ॥  
आरती कीजै हनुमान लला की ॥

लंका जारि असुर संहारे ।  
सियाराम जी के काज सँवारे ॥  
लक्ष्मण मुर्छित पड़े सकारे ।  
लाये संजिवन प्राण उबारे ॥  
आरती कीजै हनुमान लला की ॥

पैठि पताल तोरि जमकारे ।  
अहिरावण की भुजा उखारे ॥  
बाई भुजा असुर दल मारे ।



दाहिने भुजा संतजन तारे ॥  
आरती कीजै हनुमान लला की ॥

सुर-नर-मुनि जन आरती उतरें ।  
जय जय जय हनुमान उचारें ॥  
कंचन थार कपूर लौ छाई ।  
आरती करत अंजना माई ॥  
आरती कीजै हनुमान लला की ॥

जो हनुमानजी की आरती गावे ।  
बसहिं बैकुंठ परम पद पावे ॥  
लंक विध्वंस किये रघुराई ।  
तुलसीदास स्वामी कीर्ति गाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ।  
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

HANUMAN  
CHALISA

॥ इति संपूर्णम् ॥

